नई तालीम और सामयिक शिक्षा चिन्तन

'हिन्द स्वराज' का यह शताब्दी वर्ष है। इस उपलक्ष्य में देशभर में हिन्द स्वराज पर तमाम सेमीनार एवं गोष्ठियां आयोजित हुई हैं जिनमें वर्तमान समय में गांधी चिन्तन की प्रासंगिता तलाशने के प्रयास हुए। इस बहाने, हमारे लिए, शिक्षा विमर्श के इस अंक में गांधी के शिक्षा चिन्तन एवं नई तालीम पर चर्चा का एक अवसर है। साथ ही यह हमारे अधुनातन शैक्षिक विमर्श का गांधी के शैक्षिक चिन्तन एवं नई तालीम के साथ संबंध देखने का भी एक मौका उपलब्ध कराता है।

हिन्द स्वराज में गांधी जी आधुनिक-औद्योगिक-सभ्यता की बेबाक आलोचना करते हैं। हिन्द स्वराज 1909 में लिखी गई थी और तभी से यह राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय रही है। प्रत्येक सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अथवा शैक्षिक चिन्तन की जड़ें अपने देश-काल में जमीं होती हैं और उसमें एक तरह के समाज की संकल्पना निहित होती है अर्थात् उस चिन्तन के आधार पर निर्मित होने वाला समाज कैसा होगा। गांधी जी के शैक्षिक चिन्तन में भी एक तरह की समाज दृष्टि, एक समाज की संकल्पना, निहित है। आज के समय में गांधी चिन्तन को समझने के लिए यह आवश्यक है कि उन चुनौतियों को समझा जाए जिनसे तत्कालीन समाज जूझ रहा था और जिनसे बाहर निकलने के लिए उस समय का राजनैतिक नेतृत्व दिशा तलाश रहा था। बेशक, उस समय गांधी जी समाज को दिशा देने वाले एक प्रभावशाली व्यक्ति थे।

गांधी जी का सामाजिक, राजनैतिक और शैक्षिक चिन्तन एक तरफ अपने समकालीन समाज में पुनरुत्थानवादी और प्रतिक्रियावादी चिन्तन से जूझ रहा था तो दूसरी तरफ, औपनिवेशिक शासन की दासता से मुक्ति एवं पश्चिम की औद्योगिक सभ्यता के समाज पर पड़ रहे प्रभावों से बाहर निकलने के तरीके खोज रहा था। गांधी जी इन दोनों के खिलाफ एक वैकल्पिक विश्व दृष्टि की खोज में जुटे थे। एक ऐसा विकल्प जिसकी जड़ें संस्कृति में गहरे पैठी हों और साथ ही जिसकी बुनियाद पर एक ऐसे समाज की रचना की जा सके जो सहयोग, आत्मनिर्भरता, संयम एवं बराबरी; आदि के मूल्यों पर खड़ा हो। गांधी जी की भारतीय जनता को आधुनिक सभ्यता की बुराइयां दिखाना चाहते थे और चाहते थे कि हमारी पुरातन संस्कृति की बुनियादी खासियतों एवं मूल्यों-अहिंसा, संयम, आध्यात्म एवं मनुष्य के प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण रिश्ते; आदि- पर आधारित प्रति-संस्कृति निर्माण किया जाए। इसी द्वंद्व के बीच वे भारतीय समाज के लिए एक नई शिक्षा व्यवस्था की रचना करना चाहते थे। गांधी साहित्य के अध्ययन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वे पश्चिमी शिक्षा के घोर विरोधी थे। वे पश्चिमी शिक्षा को सिर्फ इसलिए ही नापसन्द नहीं करते थे कि वह पश्चिम से आई है बल्कि वे मूलतः उस शिक्षा के आभिजात्यपन और ग्रामीण और आम जनता के लिए इसकी निरर्थकता को भी महसूस कर रहे थे।

गांधी जी के शैक्षिक चिन्तन की विकास यात्रा बहुत ही निजी तौर पर शुरु हुई। इसमें एक तरफ उनके स्वयं के शिक्षायी अनुभवों पर उनके पुनर्चिन्तन का योगदान रहा है तो दूसरी तरफ अपने बच्चों की शिक्षा के लिए किए प्रयोगों का महत्त्वपूर्ण प्रभाव दिखाई देता है। गांधी के शैक्षिक प्रयोगों की शुरुआत दक्षिण अफ्रीका के उनके प्रवास के दौरान फीनिक्स आश्रम और टॉल्सटॉय आश्रम में हुई। भारत में उनके शिक्षा के प्रयोगों की शुरुआत, दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने और हिन्द स्वराज में शिक्षा संबंधी विचारों को लिख चुकने के करीब 6 वर्ष बाद, कोचरब आश्रम और चम्पारण में नील सत्याग्रह के दौरान हुई। 1920 में असहयोग आन्दोलन के दौरान उन्होंने तमाम औपनिवेशिक संस्थानों के विरोध के साथ ही शिक्षा संस्थानों का भी विरोध किया और भारत के लिए अपनी शिक्षा के विचार को राष्ट्रीय स्तर पर अमली जामा पहनाने का काम आरंभ किया। हालांकि सन् 1920 के आसपास यह उच्च शिक्षा-कॉलेजों और विश्वविद्यालयों-तक ही सीमित था। अक्टूबर, 1937 में आयोजित अखिल भारतीय शिक्षा परिषद् के वर्धा सम्मेलन में राष्ट्रीय शिक्षा के लिए विधिवत पाठ्यक्रम विकास के कार्य को अंजाम देने का निर्णय लिया गया।

हिन्द स्वराज में गांधी जी अपने शिक्षा संबंधी चिन्तन में मुख्यतः अंग्रेजी शिक्षा के दुष्प्रभावों, साक्षरता की निरर्थकता, मातृभाषा में शिक्षण एवं शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के नैतिक अथवा चारित्रिक विकास आदि पर विचार व्यक्त करते हैं। लेकिन गांधी के शैक्षिक विचारों का विकास समय के साथ और नई तालीम के पाठ्यक्रम की रूपरेखा बनाते समय स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया। इसीलिए गांधी जी के शैक्षिक चिन्तन की समग्रता को समझने के लिए यह आवश्यक है कि 1937 में वर्धा सम्मेलन में नई तालीम के विचार पर हुई बहस एवं इसका विस्तृत पाठ्यक्रम बनाने के लिए डॉ. जाकिर हुसैन की अध्यक्षता में गठित समिति की रिपोर्ट का अध्ययन किया जाए। यह

रिपोर्ट प्रथम दृष्टि में ही, नई तालीम की चरखे और तकली के इर्दगिर्द बनी आम समझ को तोड़ देती है। इस समिति द्वारा सभी बच्चों की सात साल की अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा के लिए विकसित किया गया पाठ्यक्रम बहुत लचीला है। वह सिर्फ कताई-बुनाई की दस्तकारी तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें करीब 6 दस्तकारियां गिनाई गई हैं और स्कूलों को इनमें से किसी को भी चुनने की आजादी दी गई है। साथ ही रिपोर्ट यह आग्रह जरूर करती है कि जो भी दस्तकारी स्कूल में काम के लिए चुनी जाए, खेती-बाड़ी और कताई के काम को एक स्तर तक सीखने को पाठ्यक्रम में जरूर स्थान दिया जाए। यह रिपोर्ट भौगोलिक एवं स्थानीय हालातों के अनुकूल स्कूलों को अपने लिए पाठ्यक्रम चुनने के प्रति भी सकारात्मक नजरिया रखती है। कई मायनों में यह रिपोर्ट उन समस्याओं को संबोधित करती है जिन्हें शिक्षा के सामयिक, अधुनातन, दस्तावेज प्रस्तावित करते हैं। इसका एक उदाहरण, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा : 2005 (एनसीएफ : 2005) में मातृभाषा में शिक्षण पर दिए गए जोर के प्रस्ताव के रूप में देखा जा सकता है। नई तालीम में और स्वयं गांधी जी के शिक्षा चिन्तन में मातृभाषा में शिक्षण पर बहुत जोर है। भाषा शिक्षण के बारे में एनसीएफ : 2005 प्रस्तावित करता है कि कक्षाओं में बहु-भाषिकता को एक संसाधन के तौर पर इस्तेमाल किया जाना चाहिए। गांधी जी हिन्द स्वराज में और डॉ. जाकिर हुसैन समिति की रिपोर्ट में एक से अधिक भाषा सीखने पर जोर दिया गया है। स्वयं गांधी मातृभाषा में शिक्षा के विचार से इतने प्रभावित थे कि दक्षिण अफ्रीका में भी वे अपने बच्चों की शिक्षा को गुजराती में कराने के प्रति उत्सुक थे (हालांकि इसके लिए वहां उन्हें कोई शिक्षक नहीं मिला)। इसके साथ ही एनसीएफ : 2005 के लिए गठित फोकस ग्रुप 'काम और शिक्षा' के दस्तावेज को देखा जा सकता है जो स्कूली शिक्षा में हाथ के काम की अनुशंसा करता है। एनसीएफ : 2005 में काम की शिक्षा के बारे में कहा गया है कि, उपयोगी काम बच्चों के 'सामान्य विकास में तो योगदान देता ही है, साथ ही जब उसे विद्यार्थियों के जीवन पर लागू किया जाता है, तो वह उनके लिए मूल्यों, बुनियादी वैज्ञानिक अवधारणाओं, कौशलों और रचनात्मक अभिव्यक्ति के कारक के रूप में काम करता है'।

गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों में सर्वाधिक आलोचना, रवीन्द्रनाथ टैगोर ने भी की थी, उनके श्रम या दस्तकारी के काम पर जोर देने के कारण की जाती है। डरबन के फीनिक्स आश्रम में किए अपने शिक्षा के प्रयोगों के बाद उनका कहना था कि, 'सर्वोच्च शिक्षा श्रम से ही मिलती है।' वे बुद्धि और कर्म के बीच अनन्य संबंध देखते थे। लेकिन हाथ के काम और बुद्धि के बीच के संबंध के बारे में जाने-माने शिक्षाविद् प्रो. यशपाल एक साक्षात्कार में कहते हैं, 'काम भी शिक्षाशास्त्रीय तरीका है। हाथ से काम करके बच्चे जो सीखते हैं, आप कैसे सिखाएंगे शब्दों में ?...अगर हाथ से काम करेंगे तो दूसरी शिक्षा है वह भी गहरे तरीके से समझ आएगी।...अंगुलियों से बहुत कुछ सीखकर दिमाग में आता है' (शिक्षा विमर्श, मई-जून, 2006)। एनसीएफ : 2005 का दस्तावेज पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान के बजाए ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ने की पैरवी करता है और शिक्षण को कक्षा-कक्ष तक ही सीमित करने की आलोचना करता है। साथ ही विषयों के आपसी तालमेल पर बल देते हुए उनके आपसी संबंध के बारे में कहती है, 'विषयों का आपस में कोई तालमेल नहीं होता तो वे बिलकुल अपरिवर्तनीय उपखंड बन जाते हैं इसीलिए ज्ञान भी समेकित और जुड़ा हुआ लगने की बजाए खंडित लगता है। ...स्कूली ज्ञान और बाहरी ज्ञान के बीच एक सीमारेखा खिंच जाती है'। गांधी का शिक्षा चिन्तन एवं नई तालीम का विचार दस्तकारी के इर्दगिर्द बाकी विषयों के शिक्षण की योजना प्रस्तावित करता है। ताकि बच्चे शिक्षायी अनुभवों को समग्रता के साथ देख-समझ सकें।

गांधी जी के लिए शिक्षा मकसद 'मनुष्यता सिखाना' था। क्योंकि उनका मानना था कि मौजूदा शिक्षा हमारे समाज को ज्ञान और श्रम के आधार पर विभाजित कर रही है और अंग्रेजी शिक्षा व्यक्तिओं में नैतिकता एवं सामाजिक जिम्मेदारी का विकास करने में असफल है। अपने अनुभव से वे इस नतीजे पर पहुंचे थे कि 'मौजूदा शिक्षा पंडिताऊ किस्म की शिक्षा है, जो कुछ लोगों को ज्ञान का ठेकेदार और कुछ को श्रमपूर्ण जीवन जीने के लिए तैयार करती है'। वे शिक्षा के माध्यम से ज्ञान और श्रम के बीच संतुलन कायम करने पर जोर देते थे। इसके लिए वे कहते थे कि व्यक्ति का सम्मान वंश, जन्म, वर्ण अथवा धन पर निर्भर न होकर उसकी कार्यक्षमता पर होना चाहिए और श्रम केन्द्रित शिक्षा व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ ही एक समाजोपयोगी प्राणी बनाती है।

गांधी जी के शिक्षा चिन्तन पर बहुत से प्रश्न उठाए जा सकते हैं। यह कहना अनुचित होगा कि गांधी का शिक्षा चिन्तन पूर्ण है। लेकिन यह जरूर कहा जा सकता है कि गांधी के शिक्षा चिन्तन में ऐसी बहुत-बातें हैं जिन्हें अधुनातन शिक्षा चिन्तन भी स्वीकार करता है। शिक्षा विमर्श का यह अंक गांधी के शैक्षिक चिन्तन की एक बानगी प्रस्तुत करता है। संभवतः यह गाांधी चिन्तन को जानने-समझने में कुछ दिलचस्पी पैदा करे, इसी आशा के साथ। ◆